समय
रा
दसखत

रचणाकार

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर

उळथो

भंवरलाल नाहटा

भेंटणा

श्री सोहनलाल, अजितकुमार, राजकुमार लूणावत

नागोर/मद्रास

आसीस : मुनिराज श्री महिमाप्रभसागर जी म.

संयोजणा : मुनि श्री ललितप्रभसागर जी म.

आवरण : श्री सोहनलाल राठी

परकासण : श्री जितयशाश्री फाउंडेशन
9 सी, एस्प्लानेड रो (ईस्ट)
कलकत्ता-69

आविरति : पोस, 2043

कीमत : मुफत/भेंटणा

दो आंकड़ा

निरमळ आतमा समय है। सिगलां विकल्पां सुं अतीत आतमा री शुद्ध सुभाव ई समयसार है। कैणैलायक-बिना कैवणै विचारां रो कथण, लाध्यां-अणलाध्यां अनुमवां रो उघाड़, दीठे-अदीठे देखावां रो आंकणो ई समय रा दसखत है।

समय तत्व री सिगलासुं घणी अर्थवत्ता है। इण सुं घणा सार्थक तत्व म्हारे वासते तो अणमिल्याड़ा ई रेया। सचेत जीवण री उपयोगिता रै वासते चेतणा रे खनै समय" ई एक उपाव है, एक साधण है। समय तो सार है। इण सुं अळगो हुणो साधना अर जीवण रै पेसताणे रे बिंदु सुं दूर रहणो है।

समय री नींव माथै ई दरसण रो मवन खड़ो हुवै। समय रो अस्तित्त्व उत्पत्ति, थिति अर विणास सुं जुड़ियोड़ो है। उण रै साथै अै तीनुं प्रकिरियावां लागोड़ी है अर्थात कई उपजे, कई विलाइजे अर कई सासतो र थिर थायो तत्व है। समय रो औ ई तिविध रूप दरसण है। दरसण विचार-मंथण रो परणाम है। समय अर विचार रो संगम दावै जिको काम साधै सकै है। बडै सुं बडै सोग ने भी औ णिरतेज कर देवै है। उचित समय में सही विचारां रो समागम जरूरी है। खरेखरऔई समय री सार्थकता रो उपाव है।

समय रो परतेक खण घणो मोलीणो हुवै, ज्यों सोने रा कण-कण। समय सब सुं मोटो है, देव सुं भी। देव नै तो पूजा-प्रार्थना रै तरीकै सुं बुलायो जा सकै, पण बीत्योड़ो समय लाख उपाव करियां सुं ई कदेई बावड़े को"नी। सायाणीई समय उत्ताल तरंगां री तरियां चंचळ है, जिके ने रोक"र राख्यो नीं जा सकै। पण उण रो सदुपयोग कर लेणो ई उणरो बचत है-- सार्थकता है। इणै वासते कुण इसो बुद्धिवाण है, जिको सांपड़्योड़ै समय रो उपयोग आपरी समृद्धि वासते को करै नी।

समय"ई जीवण है। जीवण रो सिरजण भी समय सुं हुयो है। पण जीवण घणै थोड़े समय रो है। ज्यूं-ज्यूं समय बीतै-जीवण छोटो हुतो जावै है। सूरज उगण में उगणै रै साथै ई आयूण रो जातरा चालू कर देवै। सूरज बिसूई जणै सुं पैली ई यानो अंधारो लोल जावै, जिके सुं पैलो ई आपां नै समय रै अदीठ खजानै अर उणरी परता में, थरां में दबोड़ै रहस्य नै ढूंढ काढणो है। म्हें सदाई, समय रै परकास ने पाणै वासते विकळ हां, पण परालबध री विडंबणा इसी है के उणरो परापति रो मोको आवै जद म्हें ऊंघता ई रेह जावां। जद जागां तो अंधारै रे सिवाय कई ई हाथ को आवै नी।

समय हाथ सुं निकळ्यो"र पछतावै। पण पछै पछताणै सुं कई फायदो ? खेती सूक्यां पछै बिरखा कई काम री ? समय नै बचाणो अर समय री सुद्धता / पवितरता जाणनो ई "सामाइक" है। सामाइक रो छेकड़लो परणति ई समाधि है। इणै अवस्था में समय ई एक लो बच्यो रैवै है, जिको इसो परकास रो मोटो थांब है, जिको पळ-पळ जोत देवतो रेवै।

चन्द्रप्रभ

गणतन्त्र-दिवस
1985.

(चन्द्रप्रभसागर)

प० पू० शासन-प्रभावक मुनिराज श्री महिमाप्रभसागरजी म० सा०

परसावणा

संसार रा भासा-परिवारां में भारोपीय भासा-परिवार रो मोटो महत्व है। इण भासा-परिवार में राजस्थानी भासा री घणी महत्ता है। डिंगल, मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढाडी, मेवाती आदि अनेक रूपां में इण भासा रो लोक जीवण में घणो विकास हुयो। आ अणेक भेदां रे हुंता थकां इण भासा री आपरी स्वतन्त्र अर मूळ एकता री पिछाण है। देश रे साहित रे उत्थान में इण भासा रे कवियां अर लेखकां रो घणो जोगदान है। हिन्दी-साहित रो आदिकाल रो घणखरो साहित, जिके में पृथ्वीराज रासो, अमीर रासो, खुमाण रासो, बीसलदेव रासो आदि रचनावां राजस्थान रे कव्वियां री लेखणी सूं ईज परगटायोड़ी है।

वीररस परधान रचनावां डिंगल में है। वीररस रे सिवा सिणगार आदि दूजा रसां पर भी राजस्थानी में अनेक कव्वियां ग्रन्थ लिखया। धरम, भगति, साधणा, अध्यात्म आदि विसयां पर भी इण भासा में घणो साहित रचीज्यो, जिकेमें कव्वियां अर लेखकां रो मोटो फाळो है। विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जद डिंगल में रच्योड़ी वीररस री तथा दूसरी सिणगार आदि रसांरी रचनावां सुणाई जी, तो विश्व-कवि हरख सूं खिल उठ्या अर बोल्या के वीररस रो इड़ो साहित संसार रे साहित में मिलणो मुसकल है।

घणे दुःख री बात है धरम, संसकिरति तथा दरसण अर कल्पनावां री इत्ती सबळ विरासत धारण करणे वाळी भासा री गरिमा ने आपां सगळा जिकां री आ मायड़ भासा है, भूल रह्या हां। आज देस री सगळी भासावां आप आपरे खेतर में आगे बदती जावे है, पण आपां राजस्थानी बोलणियां ऊंघमें सूतोड़ा हां। आपां राजस्थानी कवि री इण उकति ने "दीपे बारा देस, साहित जारो - जगमगे" क्यूं भूल रेयां हां। आ घणी विचार री बात है। राजस्थान रे सपूतां ने इण पर जरूर-जरूर ध्यान देणो चाइजै।

राजस्थानी रे संबंध में आ जिकी थोडी-घणी चरचा है, उणमें स्व. सूर्यकरण पारीक, ठाकुर रामसिंह, श्री नरोत्तमदास स्वामी तथा श्री अगरचंद नाहटा आदि बीकानेर रे साहित कारां री तथा जोधपुर आदि रा कतिपय परमुख राजस्थानी सेवी विदवानां री मोटी परेरणा है। सारो राजस्थान अर राजस्थानी भासो आरो घणा किरतग है।

राजस्थानी भासा रे विकास पेटे आज कई परक र रा काम करणा जरूरी है। न्यारी-न्यारी विधावां में स्वतन्त्र साहित रो सरजण इण भासा में हुवणो चइजै। इण री खमता इण भासा में ओछी को"नी। इण रे साथ दूजी- दूजी पुराणी भासावां रे तथा आज री हिन्दी आदि चालू भासावां रे साहित रे अनुवाद री काम भी अति महत्व रो है। गद, पद वगेरे में लिखीयोडी- रचियाडी चोखी किताबां रो राजस्थानी में उल्थो पण हुवणो चइजै। इण स्यूं भासा री समरिधि बदसी, विकास हुसी।

इण परसंग पर "समय रा दसखत" रे नांव स्यूं "समय के हस्ताक्षर" { रचणहार: महोपाध्याय श्री चन्द्रप्रभसागरजी } रे उल्थे री कई चरचा हूं करणी

परथावणा

संसार रा भासा-परिवारां में भारोपीय भासा-परिवार रो मोटो महत्व है। इण भासा-परिवार में राजस्थानी भासा री घणी महत्ता है। डिंगल, मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढाडी, मेवाती आदि अनेक रूपां में इण भासा रो लोक जीवण में घणो विकास हुयो। आ अणेक भेदां रे हुंता थकां इण भासा री आपरी स्वतन्त्र अर मूळ एकता री पिछाण है। देश रे साहित रे उत्थान में इण भासा रे कवियां अर लेखकां रो घणो जोगदान है। हिन्दी-साहित रो आदिकाल रो घणखरो साहित, जिके में पृथ्वीराज रासो, अमीर रासो, खुमाण रासो, बीसलदेव रासो आदि रचनावां राजस्थान रे कविआं री लेखणी सूं ईज परगटाथोड़ी है।

वीररस परधान रचनावां डिंगल में है। वीररस रे सिवा सिणगार आदि दूजा रसां पर भी राजस्थानी में अनेक कविआं ग्रन्थ लिखया। धरम, भगति, साधणा, अध्यात्म आदि विसयां पर भी इण भासा में घणो साहित रचीज्यो, जिकेमें कविआं अर लेखकां रो मोटो फाळो है। विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जद डिंगल में रच्योड़ी वीररस री तथा दूसरी सिणगार आदि रसांरी रचनावां सुणाई जी, तो *विश्व-कवि हरख सूं खिल उठ्या अर बोल्या के वीररस रो एड़ो साहित* संसार रे साहित में मिलणो मुसकल है।

घणे दुःख री बात है धरम, सिंसकिरति तथा दरसण अर कल्पनावां रो इत्तो सबळ विरासत धारण करणे वाळी भासा री गरिमा ने आपां सगळा जिकां री आ मायड़ भासा है, भूल रह्या हां। आज देस री सगळी भासावां आप आपरे खेतर में आगे बढती जावे है, पण आपां राजस्थानी बोलणियां ऊंघमें सूतोड़ा हां। आपां राजस्थानी कवि री इण उकति ने "दीपे बारा देस, साहित जारो - जगमगे" क्यूं भूल रेयां हां। आ घणी विचार री बात है। राजस्थान रे सपूता ने इण पर जरूर-जरूर ध्यान देणो चाइजै।

राजस्थानी रे संबंध में आ जिकी थोडी-घणी चरचा है, उणमें स्व. सूर्यकरण पारीक, ठाकुर रामसिंह, श्री नरोत्तमदास स्वामी तथा श्री अगरचंद नाहटा आदि बीकानेर रे साहित कारां री तथा जोधपुर आदि रा कतिपय परमुख राजस्थानी सेवी विदवानां री मोटी परेरणा है। सारो राजस्थान अर राजस्थानी भासो आरां घणा किरतग है।

राजस्थानी भासा रे विकास पेटे आज कई परक र रा काम करणा जरूरो है। न्यारी-न्यारी विधावां में स्वतन्त्र साहित रो सरजण इण भासा में हुवणो चइजै। इण री खमता इण भासा में ओछी को"नी। इण रे साथ दूजी- दूजी पुराणी भासावां रे तथा आज री हिन्दी आदि चालू भासावां रे साहित रे अनुवाद रो काम भी अति महत्व रो है। गद, पद वगेरे में लिखीयोडी- रचियाडी चोखी किताबां रो राजस्थानी में उळथो पण हुवणो चइजै। इण स्यूं भासा री समरिधि बढसी, विकास हुसी।

इण परसंग पर "समय रा दसखत" रे नांव स्यूं "समय के हस्ताक्षर" (रचणहार: महोपाध्याय श्री चन्द्रप्रभसागरजी) रे उळथे री कई चरचा हूं करणो

चावूं। रचणाकार रो ओ सुन्दर अर अनूठो काव्य-संग्रह है। इण में जीवण री उण सचाई ने उजागर करणे रो सचोट जतन है, जको आज उण्माद में गरिस्योडी पडी है। लोक रे बहाव में अंधाधुंध बैवता लोगां ने उदबोध देवणे रो काव्यमयी भाव परधाण सैली में इण रचणा द्वारा जिको परेरणा रचणाकार दीवी है, बा बधाई रे जोग है। सरळ भासा में ऊंडा भावां ने इत्ते सुंदर ढंग सूं बै लिख्या है के बै समय रा दसखतां सूं समय रा सिलालेख हुयग्या।

रचणाकार खुद बीकानेर-राजस्थान में जल्मयोडा है। इत्ती छोटी सी आयु में इत्ती महत्वपूरण अर सुंदर किताबां रो बै लेखण करियो है, के उणने देख'र लोगांने अचरज हुवे, पण सुरसत माता रो उणारे ऊपर घणी किरपा है। बै आगे जा'र कित्ता मोटा साहित-सरजणहार निवडसी, आ बात सिगला जाणे। जैन विद्या अर दरसण रो उणाने घणो ऊंडो ग्यान है। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी वगेरे में लेखण रा आछा अभ्यासी है। उण री कृतियां अर लेखां री साहित रे खेतर में आछी परतिस्ठा है।

राजस्थानी में रुचि अर परेम रखणे वाळा भायां में भावना जागी के उणरी इण रचणा रो जदी राजस्थानी में उळथो परकास में आवे तो राजस्थानी में बोलणे-समझणे वाळा भाई-बहनां ने मोटो लाभ हुवे। राजस्थानी जैन साहित अर इतिहास रा मानीता विदवान श्री भंवरलालजी नाहटा रे कने आ बात पहुंची। इण काम रे बाबत राजस्थानी भायां री तरफ सूं निवेदन करियो गयो के इण काम ने पूरण करणे में आपई समरथ है। श्री भंवरलालजी जन्मजात परतिभा रा धणी विद्या-संस्कारी पुरुष है। माता लिछमी रे साथे-साथे सुरसत माता री भी जीवण भर उपासणा करता आय रह्या है। भारतीय साहित रा जाणिता विदवान लेखक स्व. श्री अगरचंद जी नाहटा रा चिरंजीव भतीज है। अठै आ बात भी लिखणै जोग है के "समय के हस्ताक्षर" रा रचणाकार जैन सिद्धान्त प्रभाकर, महोपाध्याय चन्द्रप्रभ-सागर जी श्री अगरचंद जी नाहटा रा संसारी जीवण रे नाते दोहिता है। स्व. श्री अगरचंद जी साहित जगत रा, खास तौर सूं मोटा महारथी हा। उणा जीवण में घणो काम करियो। श्री चन्द्रप्रभसागर जी उणारे कारज ने गौरव रे साथ पूरो करसी, इसी आसा करणी संगत अर समुचित है।

उणारो ओ उळथो मूळ ने परगट करणे में बिल्कुल समरथ है। श्री भंवर-लाल जी री शब्दां अर भावां रे पेटे गहरी सूझ पकड ई वो कारण है, जिकेसूं उळथो इत्तो सुंदर बण सक्यो।

आसा है, इण उळथे सूं राजस्थानी भासारा पाठक भावनावां री आणंद लेणे रे साथे जीवण तत्व रो साक्षात्कार करसी।

3. 12. 1986 — डॉ. छगनलाल शास्त्री

सरदारशहर (राजस्थान)

कठै/कई

अणोखी रचना

उथल पुथल नै

एकूकौ पानौ

वांचण लागौ

ध्यान लगार

तितली जिसी मनभावणी

एक उदबुदी/अणोखी रचना

ओ ही है संसार

आ ही है सिरिस्टि ।

जातरा

वूही आ रेयी है
खलक - मुलक री जातरा माथे
दूर दरियान सुं
निरन्तर चालू
जीवन री नैया ।
अरस - परस नै
जिलम - मरण रै
जूना जर्जर घाटा नै
अनादिकाल री जातरा सुं
जातरा री बेचैनी सुं
आकुल - व्याकुल
मुगति - बोध हुवैला
इण अन्तस् रै चैते सुं
पा जासौ तत्काल
आतमा रौ द्वीप ।

अणबोल्या बैण

घणा अनोखा
अणबोल्या बैण/
मौन री भाषा
बारै सुं लागै स्तब्ध
अन्तर में मुखर/वाचाल
भावां री लहुयाँ उठै
भावां रौ लैण-दैण चालै
नहीं टंकित मिलै
शब्द-कोषां में
बै अभिव्यक्त भाव/अरथ
स्वर-व्यंजन नहीं
है आतमा रा संस्कार
अगाध अरथ भरियो
है अखूट भंडार ।

जीवन - घड़नार

अणघड़ पत्थर
कंट रूप
दीखतौ बेडौलो
लोक - बाग री नजर अणदेखी
अपमान भरियोड़ी
उणरौ कांइ मोल हुवै ?

घड़नार
सचेष्ट गंभीर बण
अदभुत एकाग्र मन
सुकुमार चोट सुं
छीनी - हथोड़ी रौ प्रयोग
अनवरत निखरै
प्राज्ञ - कला रो भोग ।

दूध में माखण
भाटे में मूरति
देवालय में रोशनी
जन-जन सुं पूजित

धन्य बण्यो घड़नार/शिल्पकार
उणरो अदभूत हाथोटी
जीवन-निरमाण उपकारी
अध्यातम दरसक साचोटी ।

आतमा रो कळमष दूर करै
सदगुरुवर प्रज्ञा-छैनी सुं
राग-द्वेष भुंडापो सिगलौ
आलोकित कथनी रैहणी सुं ।

हे उपकारी परम गुरु !
प्रज्ञाशिल्पी अन्तर री आतमा रा
सिमरूं प्रति सांस 'नहीं भूलूं
हूं आजीवन थांरा उपकारां ।

सोहम्

अहम् रो वक्तव्य
आतमा री मंजूरी ।
अहम् इदं रो एकौ
सोहम् री कणरी ॥

आकार - निराकार

देख रेयो तूं
अपलक साक्षात्
जठे - जठे आकाश,
और जिका देखै वै सिगला
मंजूर करै ओ ही आकाश ।
पा जासो थे
उण रै ई पार
अन्त हीन आकाश ।
कारण,
खोज रेयो तूं
रूप आकाश रो,
है जठे मिलै अवकाश
वठे - वठे मौजूद आकाश
रूपी नहीं; अरूपी है
किण माफक देख सकौला ?
अरूप में रूप - थै खुद हौ
निराकार में आकार - थै' ई हुवौला !

प्रयोगसाळा

छानी - लुकी गुपत है
हद सुं घणी गोपनीय
मिनख री अंदरुणी प्रयोगसाळा
सगलां खातर खुली है
विज्ञानमयी प्रयोगसाळा
देख सकै हर कोई मिनख
इण माथै हुंतै प्रयोगां नै ।
पण
मिनख रै भीतरी प्रयोगसाळा !
घणी निजू
बिल्कुल स्वयंगत
देख सकै है
प्रयोगसाळा नै
उण में हुया प्रयोगां नै
तो एक मात्र प्रयोगकारी ।

खेवैयो

लांबी है जातरा
समंदर है अथाग
अप्रमत्त रहीजो
छूट न जावै कठैइ
आतमा रे धरम री पतवार।

विवेक सुं चलाइजो
भरियोड़ी आ
जीवन री नाव
ज्ञान-करम रे भार सूं।

छेद एक' ई हुय जावेला
तौ डूबोला काळी धार
इण अणंत सागर में
पहोंच नहीं पावोला भाई !
अथाह समंदर रै उण पार
जठे जगमगा रेयो मुगति रो अनंत प्रकाश
संसार नहीं; पण सुनेहरो है वो संसार।

आँधो उछाव

तूं उच्छाह री बात करै है
पण
बेलगाम घोड़ो है
थारो ज्ञान बिना रो उच्छाह
उच्छाह साचौ करौ
नई तो,
घाटो' ई घाटो है
आँधै उच्छाह में ।

अचेतगी

डूब्योड़ा है जिका

संसार - समंदर में

उठ'र ऊपर आयां बिना

तिर नहीं सकेला

उण रै उत्ताल प्रचंड प्रवाह में।

बिन तैर्यां

पहोंचोला किण विध

भव - सागर रे उण पार ?

नाथपणे री तरफ

रईसी और राजसत्ता रे पलड़ों में
वरधमान महावीर
थै' ई सवामी था अपणे आप रा ।
निस्संग –
संसार - सागर में चलाई
देह रूपी नाव
आतमा रूप खेवटियो
साधना री बलवान
पतवारो रे सहारै ।
नजरां थी ही सम्यग
साधन साध्य रे खातर
विवेक निरमल हौ
अर अनासक्त वैराग ।

चिर साथी ही
लोक मंगल री भावना।
जग-भलाई री गाथायाँ
थै प्रकासित करी
अनुभ्त परिभाषा
सनाथ - अनाथ री
पुदगल परिणामी आतमा अनाथ है;
आतमा रे परिणाम री प्रवृति सनाथ है।

खुद पर खुद री चढ़ाई

आ जावै जो
'पर' सूं 'खुद' में
मिल जावै
'खुद' में 'खुद'
हमेसा रै वास्तै
परगट हुसी
आतमा सकति री
फेर बिन धूएँ री बेजोड़ जोत ।

खणनासी

म्हे खणनासी
थे भी खणनासी
खेल रैयो है
खणनासी साथै खणनासी
बणा रेया है खणनासी' ई
खणनासपणे रो इतिहास
सासवतता रो हुवै किण तरै
फेर म्हारे ऊपर विसवास
कित्तो गैलो संसार ?

जागण

भरमवश आपनै
भेड़ मानकर
घूमे भेड़ां रै टोळे में
नरसिंह ।
दरसन कर्यो जद
निजी रूप रो
सरोवर रे जळ रे सीसे में
हुय जावै सासवत सच्चाई रो
साक्षातकार
फेर तो पर्याप्त
भेड़ों रे टोळे ने भगाणे तांई
नरसिंह रो एक पाँवडो
एक दहाड़, एक गरजण ।

थारो ईसवर–तूं'ई

ईसवर थारौ
थारै अन्दर
तूं'ई है थारौ ईसवर
तूं ही कारक
तूं ही नियामक
या संचालक
तूं ही है संहारक
अपणै जग रौ
पार कठै
थारी लीलावां रो
तूं'ई है महालीलाधर ।

आ कैईजै छिमा/अहिंसा

विषधर या
  विषमय ज़्वांर उफाण
    विषभरी भयानक फुंकार
      विष लिपटोड़ी ज्वालायाँ
        क्रोध रो ज्वलंत नमूनो
          चंडकौसिक

क्रोध में बळयो
  हिंसा में पल्यो
    लोही में मन
      वासो निर्जन
        भयंकर

दैत्य ज्यूं विकराल
  तातै लोहै जिसो ताप
    मार रेयो
      विसैलादांत, क्रोधी ।

इचरज री बात
आकरोष री धारा में
क्या औ लोही है ?
नहीं, दूध
क्रोध रै बदले
छिमा रो अनुपम प्रवाह ।

आतमा रे संबल रो थंभ
करुणा रो प्रतिबिंब
दया रो सागर
अहिंसा रौ गवैयो
खड़ो है निर्भय
ज्योतिर्मय
वरधमान - महावीर

क्रोध अर छिमा
हिंसा अर अहिंसा
लोह अर पारस
चण्डकौसिक अर महावीर
छिमा री जय
अहिंसा री विजय ।

भीतर री उळझण

जद सन्यास में हुवै
लागै है
गिरहस्थी आछी
जद गिरहस्थी में हुवै
लागै है
सन्यास आछो;
ज्यूं पिंजरे रै पंछी नै
लागै है
आकाश आछौ
गिगन-विहारी पंछी नै
लागै है
पिंजरो आछो ।

मन री चुप्पी

मनोमौन/मन री चुप्पी

मुनित्व रौ विनियोजन

ध्यान रो अन्तिम चरण

वाकी कांई फेर

विचार

विचारों में विकार

निर्विचार

निर्विकार ।

भीतर री उळझण

जद सन्यास में हुवै
लागै है
गिरहस्थी आछी
जद गिरहस्थी में हुवै
लागै है
सन्यास आछो;
ज्यूं पिंजरे रै पंछी नै
लागै है
आकाश आछो
गिगन-विहारी पंछी नै
लागै है
पिंजरो आछो ।

मन री चुप्पी

मनोमौन/मन री चुप्पी

मुनित्व रौ विनियोजन

ध्यान रो अन्तिम चरण

बाकी कांई फेर

विचार

विचारों में विकार

निर्विचार

निर्विकार ।

जोत

दीयै री जोत
आतमा रे जोत रो
अनुपम प्रतिबिंब है
अलौकिक आतम-जोत
प्रभा-पुंज रो
चोखो प्रतीक है
सत्यं-शिवं-सुदरम्—
रे घणो निजीक है ।
दीयो अर आतमा
दोनूं में प्रकास है
अदभुत द्वंद्व रो समास है
बाहरी आलम्बन तुच्छ है
आतम-उदय, आतम-उद्धार
निश्कलंक स्वच्छ है ।

आलोक रा चावा जण
आतमा रे परीक्षण तांइ
अंतस् रे निरीक्षण तांइ
दीये री जोत
परगट करे है
आतमा रो आलोक ।

राख बण जावै
कषाय - कचरो
बळ-जळ नै
नाश हो ज्यावै
तृष्णा - पतंगो
बच पासी फेर कठै
करम-अन्धारो
पा'यर आतम - दरसन
हुय'र परमातम-शरण
शेष कठै फेर मरण ?

शब्दां रो गोरखधंधो

अळूझो मत
शब्दां रे दाव - पेच में
इण रे गोरखधंधे में ।
नहीं जणे
मकड़ी री ज्यूं
अलूझ पड़सो
आपरे'ई गुंथ्योड़े जाळ में
तनै मतलब है
सीप सूं या मोती सूं ?

राजपथ

चाल्यां सूं/पार कर्या सूं
तर्क री
टेढी - मेढी पगडंडियां माथे
प्राप्ति हुवै
सत्य रै राजपथ री
पछै
जातरा सहज सोरी है
आगलै जीवन री।

अणोखो नाटक

संसार रै रंगमंच माथै
घणै काल सूं देख रेयो हूं
एक अणोखो नाटक—
नाच करा रेयो है
करमों रो नायक
जीव - नट नै
वाजै है
कदेई राजा,
कदेई रंक;
कदेई साधु,
कदेई पंडित
है कोई इसो भेख
जिको धार्यो नहीं हुवे
छोड़ी नीं हुवे इयैं
चौरासी लाख जोनियां में ।

समरसपणो

'तूँ' रो 'म्हे' में निमज्जण
'म्हे' रो 'तूँ' में निमज्जण
हुय सकसी जणेई
समरसपणे रो
साचो सिरजण ।

आतमा'ई परमेश्वर

कस्तुरी री गंध पाय
क्यूं खोज रेयो
धरती - अम्बर !
खोज कर रेयो
जिकी चीज़ री तूं
पड़ी है वा तो
थारै गूंझै रै अन्दर
थारी सम्पदा तूँ है
लिपटोड़ी है
चिरकाल सूं वां
निज घट रै भीतर ।

प्रतिबिम्ब

शोधूं/अनुसंधान कर रेयो हूं
समय रे दर्पण में
जनजाति रै प्रतिबिम्ब री ।

प्रभावित है सिगळा
निकम्मापण में ।

उपदेश तो हो
निसकाम हुणे रो

पण,
हुयग्या म्हे निकम्मा
निकम्मापणे में किरियालगन म्हे ।

दुराहो बचपण

नान्है शिशु रो जीवन - निर्माण
गमले रै झाड़ सरीखो है
मुरझाय सकै है
मामूली सै लू रै झोंके स्यूं ।

जीवन - निर्माण शिशु रौ
रोई/जंगल रै रूंख ज्यूं
बाल'ई बाँको नीं कर सकै
कोई तूफान बवंडर ।

बठै रा बठै

चाल्यां चावै है
बन्धी लीक में जीवण वाळो
गोल चक्कर/वर्त्तुलाकार
घाणी रै बलध री तरियाँ
पाछो पहुंचै सागी जागां
लांबी जातरा रे बाद भी
बठै रो बठै'ई
शुरु करी
जठै सूं जातरा ।

दसखत

दसखत इसा करो
अमिट रूप बण जावै जो
समय रा सिलालेखों माथै ।
इसा दसखत अरथ बादरा
मिट जावै जो आवंते पल ।
बाळू रै धोरा माथै—
पाणी में खींच लकीरां नै
और कैवै, देखो
नहीं मिटै म्हारा दसखत ।

भूमा री अणदेख

लेखो राख्यो
रत्ती-रत्ती रो
उणरी रक्षा रै चक्कर में
गमा दियो
निधि रो आणंद
बचा-बचा'र
बूँद-बूँद ने
गमा दियो
रत्नाकर-समन्दर
समय बीतग्यो
कंकड-पत्थर भेळा करणे में
भवन निरमाण सूं पहली'ई
समय
मौत रो सिकंजौ बणग्यो ।

चेतो

पूरब में सूरज ऊग्यो
सरू हुई जातरा
पच्छिम कानी ।
जीवन
अत्यल्प है,
शिकार बणने सूं पहली
अंधारै रै;
पायै प्रकाश सूं
मारग बणा,
मारगफल पालाँ
कठेई पछतावो नहीं करणो पड़ै
सूर्यास्त हुयां पछै
अंधारे में खो जाणे सू ।

अणहार्या

जवानी रो तोफान
उत्तेजणा री आंधी
भयंकर रूप में ।
हूं वटाऊ हूं
पण म्हनै खतरौ कोनी,
दौडूं कोनी
एक-एक पग बढावूं हूं
समझ-समझ'र
संभाल-संभाल'र ।
तोफान/बवंडर री विदायगी रे बाद
दोडूं/घूमूं
जचे जठे
चाहूं ज्यों ।

नरमाई

प्रवाह

भयंकर सूं भयंकर

तीखे सूं तीखो

जमो साइंणा हुय ग्या

घमंडी

ऊंचे माथै आला रूंख

घमसाण बाढ़ में ।

आपो बणाये राख्यो

नदी में रेयोड़े घास

तगड़े वाहले ई प्रवाह में भी

जीवन-मरण रे संघर्ष में

पार हुय ग्यो

नरम घास

बिना कोई आफत सूं ।

बिडम्बणा

विचारों री भीड़ भरी आंख्यां
देख रेयी है
पंथा री मुकळायत
मारग-दरसक/बोळाऊ आंधो है
जोईजै
मन भावणी निरापद जातरा ।

विज्ञान सूं भेंट

विज्ञान रो जमानो
सोनलियो जुग
कण-कण में
मानवी रे मानस-समंदर में
सागर है घड़े/घाघर में
सिन्धु है बूंद में
ज्ञान है विज्ञान में

आदूकाल सूं ई नित नुंवो
फूटरी अर ओपती
हरियाळी
वधेपे री खुश्याली
चारां कानी
विज्ञान रो तगड़ो परभात
भोग'र जोग
विचारां रो प्रयोग/वापरणो ।

विज्ञान रो जादू
संखेप सूं विश्व-कोश ताँई
प्रभा सूं प्रभाकर तांई
विज्ञान री यादाँ
बिखर्योड़ो है
आखै संसार में ।

विज्ञान अर धरम
नैड़ा आवै
विश्व-शान्ति रै वास्ता
बेलीयौ निभावै

विज्ञान सूं भेंट

विज्ञान रो जमानो
सोनलियो जुग
कण-कण में
मानवी रे मानस-समंदर में
सागर है घड़े/घाघर में
सिन्धु है बूंद में
ज्ञान है विज्ञान में

आदूकाल सूं ई नित नुंवो
फूटरी अर ओपती
हरियाळी
वधेपे री खुश्याली
चारां कानी
विज्ञान रो तगड़ो परभात
भोग'र जोग
विचारां रो प्रयोग/वापरणो ।

विज्ञान रो जादू
संखेप सूं विश्व-कोश ताँई
प्रभा सूं प्रभाकर तांई
विज्ञान री यादाँ
बिखर्योड़ो है
आखै संसार में ।

विज्ञान अर धरम
नैड़ा आवै
विश्व-शान्ति रै वास्ता
बेलीयाँ निभावै

सिरिस्टी रा सन्त

नागरिक/रहीशी री रुखाली
विषमता रो अन्त है
साचेली सृष्टि रो सन्त है ।

निखालस नागरिक कठे जोइजे ?
क्यों अर कठीने जोइजे ?

विजय-मंच री तलखण तक पहोचणे सारू
जुग री समस्यायां रे निवेड़ै खातर,
संसार में शांति रे वास्ता ।

आतम-विजय
साची विजय है

समस्यायां रो निराकरण धरम है
शान्ति जीवन रो मुद्दो है
ओ ई नागरिकता रो मरम है ।

जरूरत है

नागरिकता रो आचरण

म्हो सगला खातर

नगर रे, प्रान्त रे,

राष्ट्र रे, विश्व रे

उद्धार वास्ते,

संस्कार वास्ते ।

शहीदां रे खातर

शहीदाँ !
थै ई हो बेदाग कोहीनूर
शिलालेख
ख्यात रा सोनलिया
पत्ता ।
दसूं दिसा में फैली है
थांरी आभा,
भूल रेयो थांने है
जिकी घडी सूं देश
दोखी जद सूं ई परिवेश ।

बरताउ अर बीत्योड़ो

हूं ऊभो हो
नीले आकाश रे नीचे
धरती माता रे माथै
सैर री सड़क रै किनारै
परखतो हो
समीक्षा री नजरा सूं
बरताउ अर बीत्योड़े री दूरी नै।

सौ क्यूं ई बदल्यो
समय घणो छलियो
रीतो आलिंगन
प्यार बायरो
बोलों में मधरा
अपणायत छलीज गी ।

भीड़ भरी आंख्यां

भीड़ देखण ने जावै है
उण री आंख्यां
पण आप रै खानी निजर नहीं
अदीठ है
भीड़ में आपरी आंख्यां
देखसी भी कुण भला !
भीड़ भरी आंख्यां में
आपरी सुन्दर आंख्यां ने ।

मिनख

मिनख घणो अनोखो
मानखो भी
डांगरपणो भी
हरेक आयाम सूं भरियोड़ो
रीस अर जोस सूं
घिरणा अर मतलब सूं
जणै इणरो वीभत्स रूप
अचानक सामने आवे
तो डांगर भी
इणरे कामां सूं
सरमा जावे
रोवण लागै/बिलखण लागै ।

मूंढे रा पड़दा

महावीर रो घर छोड़ निकलणो
अळधो हुंतो जावै है
आपां री चेतना सुं
म्हे तो म्हारै कोढ भरे डील माथे
ओढ राखी है रतन-कामल
अै पड़दा ही है म्हारो संबल ।
साच, अचोरी, अपरिगरो
नारां रो है सम्बल
आचरण में तो
छल ई छल
हे महावीर !
म्हे कद बणसां निश्छळ ?

दीया चसै

घर-घर में दीया चसै
नष्ट हुयो
कद-कद अंधारो
मिंदर में दीयो जळै
रोजीनै हर पल ’ई
नष्ट हुयो कद अज्ञान अंधारो
टूटी कद मिथ्यात री बेड़ी ।
दीवाळी नैं
हरेक डागळां दियो चसै;
वां सूं भी कद
दूर हुयो जग रो अंधारो ।

स्याणप

किती विकसित,
किती सुन्दर है
आ सभ्यता/स्याणप

खतरो है
कठेइ गळागट नइं करलै
हित्यारों रा अस्तर-शस्तर
जुद्ध/राड़ री डाकण
सभ्यता अर संस्किरति रे
जिल्म्यां-अणजिल्म्यां टाबरां ने।

बंद करो
शस्तरां रो बणनो
मिनखा रो खोगाळ।

समय रे सागर में

समय-समन्दर में
डूब्या सिगला
बंची रेई यादगार
पाप रो कादो
धो न सकेली
नदियां रे पाणी री धार ।

अमर दीवाळ्यां

जगमग दीवाळ्यां
जुगां-जुगां सूं
बीत्योड़ी यादां सुख पूरी
साखी है ख्यातां
आदर्श थाप ने
बनवासै सूं बावड्या राम
उण खूसियाली स्वागत में
जगमगाया दीप;
जनम-मरण रे फन्दे सूं
मुक्त हुया महावीर
निर्वाण याद में घणा जळाया
सोनलिया घणमोला दीप
जोत निरंतर, मांदी नहीं ।

समय रे सागर में

समय-समन्दर में
डूब्या सिगला
बंची रेई यादगार
पाप रो कादौ
धो न सकेली
नदियां रे पाणी री धार ।

अमर दीवाळ्यां

जगमग दीवाळ्यां
जुगां-जुगां सूं
बीत्योड़ी यादां सुख पूरी
साखी है ख्यातां
आदर्श थाप ने
बनवासै सूं बावड्या राम
उण खूसियाली स्वागत में
जगमगाया दीप;
जनम-मरण रे फन्दे सूं
मुक्त हुया महावीर
निर्वाण याद में घणा जळाया
सोनलिया घणमोला दीप
जोत निरंतर, मांदी नहीं ।

लाभदारी अकल

भोदा मत समझो
गांवड़ियां नै
शैर वाळों री ज़्यूं
सूकै/रीतै कुवे में
डोल घालता रेवै
खेंचता रेवै
बूढ़ा हुय ज्यावै
विना क्युं इ हाथ पल्लै पड्यां ।
जाणै है गाँवड़ियां
पाणी निकालणो
खोद'र घणो ऊंडो
खाली कुवे नै ।

ममतापणो

तिर जावै
म्हारी आंख्यां में
दिमाग री लहैर्‌यां में
वो मंगतो कदेइ-कदेइ ।

राड़ मचातो हो
आम सड़क रै खातर
निजु बापोती बता-बता'र
उणरी ई है
बा गळी री जागा
भीख मांगतो
जिण माथै बैठ'र ।

फायदो उठाय'र
आम पब्लिक रौ
कर लीनो निजू धणियाप
आम जनता रो ओट में
बोल रेयो है
एक मात्र निजरो धणियाप ।

आया पछै

एक—

एक—

कर नै

सद्गुणां रा पाना

चुग-चुग भेळा कर्या वां,

मैनत रो फळ

म्हां लोगां पर छोड्यो

म्हे उठाय उण नै

रद्दी रो टोकरी में फैंक्यो ।

परिगरौ

जीवन रै हर सीगै में
परिगरे री बणी आदत
आछा पड़तर
संस्कार हुवे समापत
जीवन रै हर हिस्से में
पइसै रो धणियाप इसो
संसृति माथै
खोटो दिन आयो किसो ?

जणै अर हणै

जणै

चीर हरण वाळै
दु:शासण घणा फांफा मार्या
बणग्या बेकार
रुखवाळा बख्तर श्री किसन
जो लोक-बाग रा मंगलकार ।

हणै

लूंटारा रा बेली
रुखवाळा
धोलै दुपारै
कित्ती द्रोपद्यां रा
चीर हरीजे
कठै शासन,
कठै शरण ?

जुग रो भुंडापो

विभचार,

कुचाला,

चोरी-जारी—

बणगी

मिनख जात री नीति

हुय रैयी इणी सूं

भावी जीवन री दुरगति

आज काल री

फैसन बिगड़ी ।

इचरज

महावीर रा अनुयायी
वाणिया है
इचरज री बात
निज में हा छत्रिय
दुरलभ आतम तत्व
पाणे/प्रगटाणे खातर
उण अस्तर-शस्तर ने
वोसराया;
म्हें मरियोड़े हाथां में
अस्तर-शस्तर झाल्यां बैठा
दया/अहिंसा रे पड़दै में
कायरता ने लूकावां हां
और अनुयायी
महावीर रा बाजां हां ।

दसा

कच्ची मिट्टी सूं बणियोड़ा
झूंपड़ा में
जींवता कंकाल
मौत रै मुंह में
झूलतो मिनख ।
आ मिनखां री नहीं हवेल।
है औ मोटो कबरखानो
जठे दफणाया जावै है
जीता जागता इन्सान ।

न्याय रो दरवाजो

खट्ऽ

खट्ऽऽ

खट्ऽऽऽ

खड़खड़ाया

न्याय रा दरवाजा,

पण न्याय किठे ?

इन्यायी शासन में

दाबड़ियोड़ी पड़ी चेतना

कालुंदी कंथा ओढ़े

दखु वसन्त हेला पाड़'र

बुलाय रेयो है पतझड़ नै ।

लोई रा तीसा

लोई नै इमरत रे भरम सूं
अै गटकाय रेया है
मिनखां रे लोई रा तीसा
जोंक री दांइ ।
धक्का दे रेया
बळते ज्वाळामुखी में
विकास करतै जगत नै ।

न्याय रो दरवाजो

खट्ऽ

खट्ऽऽ

खट्ऽऽऽ

खड़खड़ाया

न्याय रा दरवाजा,

पण न्याय किठे ?

इन्यायी शासन में

दाबड़ियोड़ी पड़ी चेतना

कालुंदी कंथा ओढ़े

दखु वसन्त हेला पाड़'र

बुलाय रेयो है पतझड़ नै ।

लोई रा तीसा

लोई नै इमरत रे भरम सूं
अै गटकाय रेया है
मिनखां रे लोई रा तीसा
जोंक री दांइ ।
धक्का दे रेया
बळते ज्वाळामुखी में
विकास करतै जगत नै ।

जोत सामे

साहित/साहित्य लिखाड़
उद्योतकार
देवै संसार नै प्रकाश
खण्डहरां में दबोड़े धन नै
तेल में लुक्योड़ी आभा नै
ठेठ जीवन ताईं ।

बीत्यो जाय रेयो
इंयां अकारथ
जीवण रो वसंत ।

पिराण बिना रो साहित

गूंगे री ज्यूं
जिण साहित में
साहितकार रो
उजागर नहीं अपणायो
बोल करै नहीं जीवन
वो साहित
साहित कठै ?
है खाली
विना पिराण रा शबद,
आखरां रो टोळौ
पिराण हुवै तो आकर्षण
मुड़दै में तो कदेइ नहीं ।

इया हुवै है बदळाव

नीति रै लोहे नै
मन री भट्ठी में
चिन्तन री आगी रे भीतर
तपा-तपाय'र
निर्माण रा पग बढा'र

चोट करो
निर्दयता सूं
परिमार्जन रूप हथोड़ां सूं

खुद लोहार बण
अन्धविश्वास,
पुराणी परम्परा रा रजकण,
नयी बणावट रे संचे में
ढाल नांखो ।

त्यार हुसी
एक नवो रूप,
सुधरे संस्कारां रो सरूप ।

विणास

अठीने
विज्ञान रो विकास
वठीने
मानवता रो विणास
करणे वाळो
अर भोगणियां
दोनुं ऊभा है
डूबण नै
अथाग समंदर में ।

इया हुवै है बदळाव

नीति रै लोहे नै
मन री भट्टी में
चिन्तन री आगी रे भीतर
तपा-तपाय'र
निर्माण रा पग बढा'र
चोट करो
निर्दयता सूं
परिमार्जन रूप हथोड़ां सूं
खुद लोहार बण
अन्धविश्वास,
पुराणी परम्परा रा रजकण,
नयी बणावट रे संचे में
ढ़ाल नांखो ।
त्यार हुसी
एक नवो रूप,
सुधरे संस्कारां रो सरूप ।

विणास

अठीने
विज्ञान रो विकास
वठीने
मानवता रो विणास
करणे वाळो
अर भोगणियां
दोनुं ऊभा है
डूबण नै
अथाग समंदर में ।

जुग रो दरपण

जुग रे आरीसै में पड़ता
प्रतिबिंब साव धुंधला है
सिगला'ई घृणा, द्वेष, मत्सर
रा'ई तो पुतला है ।

फेर रंगणो जरूरी

उडणै लागौ
रंग सोवणो
आखी भूगोल रे अद्धे रो
घणो जरूरी फेर रंगणो
पण मिले कठै
चतर रंगारा कलाकार
जो पाछा रंग दै
सोनलिया रंग सूं
जिसा आगै हा
आकर्षक,
दबंग,
प्रभावक ।

जुग रो दरपण

जुग रे आरीसै में पड़ता
प्रतिबिंब साव धुंधला है
सिगला'ई घृणा, द्वेष, मत्सर
रा'ई तो पुतला है ।

फेर रंगणो जरूरी

उडणै लागौ
रंग सोवणो
आखी भूगोल रे अड्डे रो
घणो जरूरी फेर रंगणो
पण मिले कठै
चतर रंगारा कलाकार
जो पाछा रंग दै
सोनलिया रंग सूं
जिसा आगै हा
आकर्षक,
दबंग,
प्रभावक ।

परंपरा रा परसंग

जूने ढांचे में
चाल रेयो जीवन
गांवड़िया लोगां रो
सैहरां सूं अछूता रेया
सदियां सूं
गांवड़िया चिपिया बैठा है
बुरी तरैह
सदा-मद रे जीवन सूं
परंपरा रे बंधण सूं ।

नहीं चावै गांवड़िया
ढंग बदलै
रंग बदलै
उणा रो रैहन-सैण
रीति-रिवाज बदलै

उकसावै नहीं
नयापणै रो आग्रह
विज्ञान-ज्ञान री प्रगति भी।

नहीं चावै गाँवड़िया भाई
हँसी उडाणी
बडकां री चलगत/रीत्यां री
नहीं चावै
काळा दाग लगाणा
बडकां रै पग-निसाण माथै
गांव रो जीवण
रूढ्यां रो घर
प्रगति आडी भोगळ/रोड़ो ।

पुरसारथ

क्यू करै भाई
कोई री जी-हजूरी
आवला-झावला चमचागिरी ?
तनै चईजै खाणी
कमाई परसीणै री
दो हाथ मिळ्या है
मैनत करो
विरखा हुसी
घर में सोनै री ।

पढाई री रीत

कर नांखी घणी चवड़ी
आज-काल
पढाई री रीतभांत सूं
जीवण री खाई नै ।

आदमी
आदमी कोनी;
खाली बणग्यो
सूचनावां सूँ भरियोड़ो थेलौ ।

अपरिग्रहौ

धन रो बेथाग क्यों संचो
क्यों हो आमणदूमणा ?
चूस्या-शोष्या मिनखां रो
परतख श्राप है
इण्याव संच्यो धन
पाप है ।
काल रो कोनी ठिकाणो
पीढियाँ खातर करो संचो
करम-लेखणी
घसोड़ी कोनी
जद खोटा करम
उदय में आसी
संपति रा कीर्ति-कळस
बिना गिराया
ढह जासी/गिर जासी ।

पैहरो

बोलणो भी आज मुश्कल,
मौन माथै भी पहरैदार;
प्रजातंत्र री पोळयां माथै
औ किसो खड़ो बैरी असवार ?

गाँव अर रोटी

चिंता कठै गाँवड़ियां नैं
मोती री ।
टेढ़ी समस्या है
रोटी री,
सैंहरां खोस लीनी
रोटी
अबै निजर में
लंगोटी ।

बीज में रूख

बाळक

मुरगी सूं ई गयो बीत्यो
खोद नांख्यो
माळी रै रोप्योड़े
सोनळिये बीज नै
खूंद नांख्यो बीज में
रूंख रै भावी सपने नै ।

ओतार

जद-जद
धरम में हीणता आवै
तद-तद
लै भगवान ओतार,
सरजक
सिरिस्टि री रचणा कर
चैन सूं सूयग्यो
जद रूखवाळी'ई
नहीं करणी ही
तो इत्ती विषमतावां
क्यूं बोयग्यो ?

अणदेखो

बुरी तरै सतायो
निजू हितू
कांई करां बात
परायां री ।
परिताप दियो
इसड़ो दोस्तां
हूंस गई शिकायत करणै री
जो मन में ही
दुश्मन लोगां री ।

बदळाव

हर घड़ी
जीवण रो बदळाव
प्रज्ञा रो स्थानांतरण
चेतना रो विसरजण
नवा रूप धारण करता
एक दिशा सूं छोड्या
बदळ्यो मिनख रो सभाव
पहर्या बदळ्या चेहरा
किरड़े ज्यूं रंगावेजी ।

पोसाळ

द्रौणाचार्य नै
आज नहीं देवे
गुरु दक्खिणा
एकलव्य
देखालै है अंगूठो
आज पढ़ण रो ढंग इसो
उत्तम
दम्भ घणा झूठा ।

विकास रो रस्तो

जोड़जै

विकाससील राष्ट्रां रे दिशि
सहयोग अर समान इधकार
मिनख-मिनख में
राष्ट्र-राष्ट्र में
बन्द हुवै भेदभाव रा द्वार
जग री उन्नति रो साधन औ
समस्यावां रो समाधान
फैल सके जीणसूं जग रे
भाई-चारे रा भाव परधान ।

रोटी रो सवाल

घणा जोशीला
घणा उत्साही
झूंपड़ी में बैठा
पढ़णै में घणा तेज युवक
दिन रा संजोया भाव
रात में सपना देखे

कवि बणूंगो
तुलसी-सो
साहित जगत में
मायड़ भूमि रो
सेवा में
शिवाजी ज्यू सेवा करसूं

विज्ञान-लोक में नित नया
सरजण करुंला
न्यूटन ज्यूं ।

पण
अन्त नहीं
मनसूवां रो
निराश-हताश
वणे युवक
जद सामो आयो
मुँह बाये सवाल
रोटी रो ।

बेजबाबी जबाब

जबाब नहीं देवे
जद कोई
क्रोधी मिनख नै,
तो मत जाणौ
औ बेजबाब है
एक आछो जबाब है
कोई जबाब नहीं देणो भी ।
जरूरत है
इसे'ई जबाब री
क्रोधी मिनख नै ।

एकलां

काट सकै
एकेलो ऊंदर
लोहे री तिजोरी नै
फेर डरै क्यूं
मिनड़ी/बिल्लो स्यूं ।
कर लेवे एको जो
मिळनै ऊंदर सिगळा
खाल खांच सकै
मिनड़ी तो कई
बाघ री भी ।

शंकाळू दीमक

शंकाळू-दीमक
थोथो कर रेयो
जीवन-रूंख नै
जड़ा मूळ,
श्री बायरो
हुय रेयो
फळ सूं,
जो सवाल
आज रो है
वो ई सागी है
काल सूं ।

एकता

काट सकै
एकेलो ऊंदर
लोहे री तिजोरी नै
फेर डरै क्यूं
मिनड़ी/बिल्लो स्यूं ।
कर लेवे एको जो
मिळने ऊंदर सिगळा
खाल खांच सकै
मिनड़ी तो कई
बाघ री भी ।

शंकाळू दीमक

शंकाळू-दीमक
थोथो कर रेयो
जीवन-रूंख नै
जड़ा मूळ,
श्री बायरो
हुय रेयो
फळ सूं,
जो सवाल
आज रो है
वो ई सागी है
काल सूं ।

सुरसत मां

सभ्यता अर संस्कारां सूं
अग-जग नै
जग-मग कर दै
संस्कार अर चारित्र
सुगंधी री महक
जीवण रै आंगण में भर दै ।
श्रद्धा अर मानखै सूं
माथो जन रो
उपजाऊ कर दै,
हे सुरसत मां वरदै !
इसो वर दै ।

डी. एस. प्रिन्टर्स, ३/१, बाबु नायकन स्ट्रीट, मद्रास-१२.